वृत्तचित्र स्क्रीनिंग

(फेसबुक व यू–ट्यूब लाइव)

“स्पिती (हिमाचल प्रदेश) की शैलकला”

(१० अगस्त, २०२०)

आदि दृश्य विभाग

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

नई दिल्ली

वृत्तचित्र स्क्रीनिंग

"स्पिती (हिमाचल प्रदेश) की शैलकला"

प्रागैतिहासिक शैलकला मानव अतीत का दृष्टित वृतांत प्रस्तुत करते है। यह शैलकला विश्व के लगभग सभी प्रायद्वीप से प्राप्त होते है। यह शैलकला मुख्यतः दो प्रकार के हैं– शैल चित्रकला (Pictograph) एवं शैलोत्त्कीर्ण कला (Petroglyph)। भारतीय उप–महाद्वीप से दोनों प्रकार के शैलकला प्राप्त होती है। भारत के उत्तरी भू–भाग के जम्मू–कश्मीर, लद्दाख, हिमाचल प्रदेश से अधिकांशतः शैलोत्त्कीर्ण कला के प्रमाण प्राप्त होते हैं। हिमाचल प्रदेश की स्पिती घाटी से प्राप्त शैलकला लद्दाख से प्राप्त होने वाले विषयों एवं तकनीक का विस्तार है जिनमें नवपाषाण काल से लेकर ऐतिहासिक काल तक के विषय अंकित है।

पलारी, स्पिती का विहंगम दृश्य

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली के आदि दृश्य विभाग द्वारा स्पिती घाटी की पुरा संस्कृति के महत्त्व को वर्तमान पीढ़ी के समक्ष प्रस्तुत करने के उद्देश्य से स्पिती घाटी में शैल कला के सम्बन्ध में सर्वेक्षण व अभिलेखन का कार्य किया गया जिसके आधार पर एक वृत्तचित्र का निर्माण किया जिसका स्क्रीनिंग 10 अगस्त, 2020 को इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला

केंद्र के माननीय सदस्य सचिव डॉ0 सच्चिदानंद जोशी के कर कमलों से संपन्न हुआ। वृत्तचित्र का लाइव प्रसारण यू–ट्यूब व फेसबुक के माध्यम से किया गया।

वृत्तचित्र का ऑनलाइन विमोचन, बाँए से क्रमशः डॉ0 सच्चिदानन्द जोशी (सदस्य सचिव, इं0 गा0 रा0 क0 कें0), प्रो0 बी0 एल0 मल्ला (विभागाध्यक्ष, आदि दृश्य विभाग) एवं श्री आर0 ए0 रांगनेकर (निदेशक, इं0 गा0 रा0 क0 कें0)

स्पिती उत्तर–पूर्वी भाग में हिमालय पर्वत में ऊँचाई पर स्थित ठंडी रेगिस्तानी घाटी है। थ्स्पती घाटी समुद्र तल से लगभग 3000 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। यहाँ की पर्वत श्रृंखलाएं वर्ष के अधिकांश समय हिमाच्छादित रहती हैं। 'स्पिती' का शाब्दिक अर्थ 'मध्य भूमि' है, अर्थात् तिब्बत एवं भारत के बीच की भूमि। यह क्षेत्र भारत के हिमालयी आदिवासी क्षेत्र के अन्तर्गत आता है यहाँ के निवासित आदिवासी समूहों को 'भोट' समुदाय कहा जाता है जो स्थानीय बौद्ध संस्कृति के संवाहक हैं।

स्पिती घाटी की शैलकला में मुख्य रूप से शैलोत्त्कीर्ण प्रमाण प्राप्त होते हैं जो चूना पत्थर और ग्रेनाइट के पत्थरों पर अंकित हैं। इसके अतिरिक्त स्पिती घाटी के अनेक पुरास्थलों से चित्रित शैल कला के भी प्रमाण प्राप्त हुए है जिनमें नीमा–लोक्सा, सर्ग–फ़ू, श्रीमों–खदंग आदि प्रमुख हैं, साथ ही कुछ शैलाश्रयों की भी प्राप्ति हुई है। अधिकांश शैल कला के पुरास्थल स्पिती नदी के किनारे पर हैं।

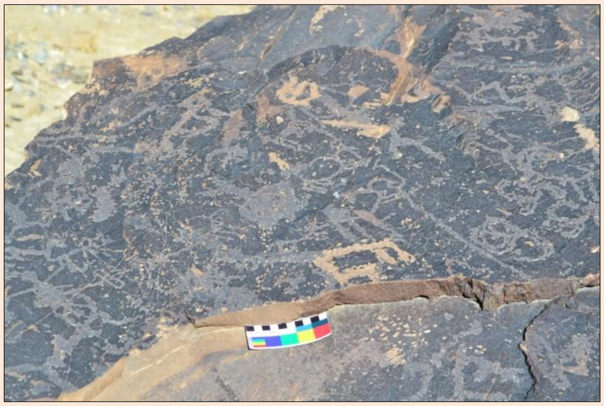

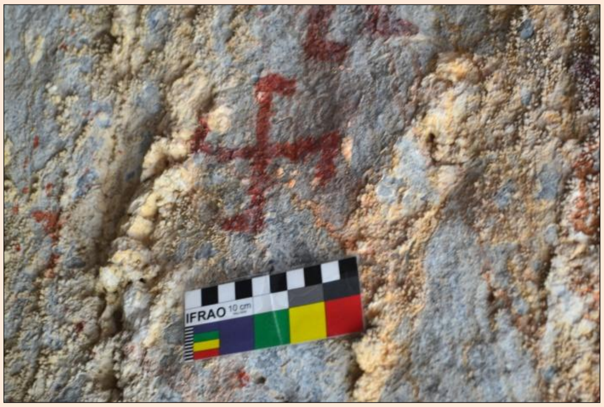

शैलोत्त्कीर्ण अंकन, पलारी, स्पिती

चित्रित शैल कला, नीमा–लोक्सा, स्पिती

प्रस्तुत वृत्तचित्र में स्पिती घाटी के प्रमुख शैल कला स्थलों के अंकनों को प्रदर्शित किया गया जिनमें डोला–सा, तासे, सेरला–से, जमथांग, लारी दोगपा, चिचिम घाटी, तासिगंग, नीमा लोक्सा आदि प्रमुख है। यहाँ के प्राचीन बौद्ध मठों का व उनके भित्तिचित्रों को भी दर्शया गया। शैलकला के प्रदर्शित विषयों में आखेट दृश्य, पशु–पक्षी अंकन, आमोद–प्रमोद, धार्मिक प्रतीकों, अभिलेखों आदि रहे। यह अधिकांश अंकन गोलाश्म प्रस्तरों पर अंकित है जो उत्त्कीर्णित अवस्था में है। शैलचित्रों में स्वास्तिक प्रतीक, मानव अंकन, नृत्य दृश्य, खगोलीय प्रतीक प्रमुख है जो अधिकांशतः ऐतिहासिक काल के है। अंकित विषयों में बौद्ध मठों के प्रतीकों एवं सम्बंधित लेखों को अधिकता है। उत्त्कीर्ण लेख मुख्यतः ऐतिहासिक कालीन व वर्तमान में स्थानीय रूप से में प्रचलित लिपि से सम्बंधित हैं।

सूर्य अंकन, दक्थो–खेरी, स्पिती

पशुअंकन, हुरलिंग, स्पिती

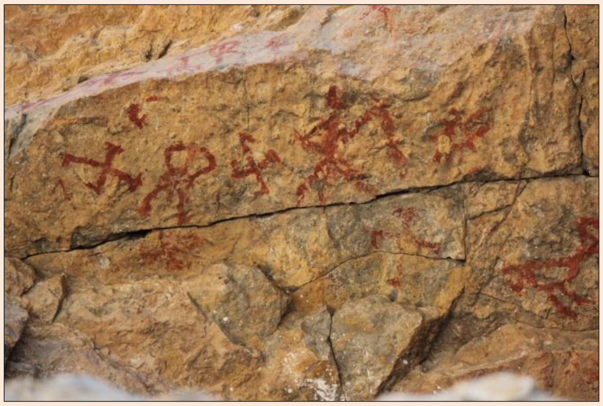

मानव तथा पक्षी अंकन,सर्ग–फू, स्पिती

लेख, जमथांग, स्पिती

चित्रित शैलाश्रय,सर्ग–फू, स्पिती

वृत्तचित्र के माध्यम से माननीय सदस्य सचिव डॉ0 सच्चिदानंद जोशी जी ने शैलकला के महत्त्व के विषय में बताया कि शैलचित्र कला हमारे पूर्वजों द्वारा प्रदान किये हुए ऐतिहासिक प्रमाण है जिसके प्राचीनतम प्रमाण फ्रांस से प्राप्त हुए जिसकी तिथि लगभग 35,000 ईसा पूर्व है। भारतीय उपमहाद्वीप में शैल चित्रकला का वृहद् संग्रह है जिसमें मध्य भारत का क्षेत्र अत्यधित समृद्ध है। मध्य भारत में रायसेन, मध्य प्रदेश में स्थित भीमबेटका पुरास्थल शैल चित्रकला का अजायबघर है जिसे यूनेस्को द्वारा वर्ष 2003 में विश्वदाय पुरास्थल की सूची में स्थान प्रदान किया गया है। प्रस्तुत शैलकला मानव जीवन के विकास के विभिन्न स्तरों को प्रदर्शित करने में सहायक है कि किस प्रकार मानव संस्कृति समूह, समुदाय से परिणत होते हुए विकसित सभ्यता की ओर अग्रसर हुई। मानव सभ्यता के इन प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर के महत्त्व को ध्यान में रखकर इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र में वर्ष 2012 में एक पृथक विभाग के रूप में आदि दृश्य विभाग (शैलकला विभाग) का प्रारम्भ किया गया। इसके साथ ही माननीय सदस्य सचिव जी ने विद्यार्थियों, शोधार्थियों आदि को अपने पूर्वजों के इन धरोहरों को संजोने व आम जनमानस में इसके प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए सहयोग करने की अपील

की। इसके अतिरिक्त वृत्तचित्र के संदर्भ आदि दृश्य विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो0 बी0 एल0 मल्ला जी ने स्पिती के शैलकला के तकनीक, विषयांकन आदि के संक्षिप्त जानकारी प्रदान की।

उपरोक्त वृत्तचित्र के माध्यम से अधिकतम विद्वतजनों, शोधार्थियों व विद्यार्थियों आदि को जोड़ने के उद्देश्य से विभिन्न विश्वविद्यालयों, कालेजों, शैक्षणिक संस्थानों तथा संस्कृति मंत्रालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय आदि से सम्बंधित अनेक संस्थाओं को ई@मेल, वाट्सअप, ट्विटर, फोन आदि के माध्यम से अवगत किया गया फलतः लगभग 150 से अधिक लोग फेसबुक लाइव जुड़े तथा बाद में IGNCA फेसबुक पेज पर लगभग 3500 एवं यू–ट्यूब पर लाइव लगभग 100 लोग जुड़े तथा अपलोड होने पर लगभग 600 लोगों ने देखा व सकारात्मक प्रतिक्रियाऐं दी। वृत्तचित्र से सम्बंधित रिपोर्ट, विहंगम रिपोर्ट को IGNCA की वेबसाइट पर अपलोड किया गया। वृत्तचित्र को यू–ट्यूब पर भी अपलोड किया गया है।

यू–ट्यूब लिंक– https://www.youtube.com/watch?v=EtXWO8tQaAk

IGNCA फेसबुक पेज
https://www.facebook.com/293302312515/videos/1227828390909192/?__so__=channel_tab&__rv__=all_videos_card

आभार

उपरोक्त वृत्तचित्र का आयोजन इं0 गाँ0 रा0 क0 के0 के माननीय सदस्य सचिव डॉ0 सच्चिदानंद जोशी जी के प्रेरणास्वरूप तथा आदि दृश्य विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो0 बंशी लाल मल्ला जी के सफल मार्गदर्शन व आदि दृश्य विभाग के परियोजना सहायक, श्री प्रवीण कुमार सी0 के0, श्रीमती रीता रावत एवं सुश्री सुपर्णा डे आदि के सम्मिलित सराहनीय प्रयास के परिणामस्वरूप संभव हो सका। अंततः संचार केन्द्र (इं0 गाँ0 रा0 क0 के0) का कोटिशः धन्यवाद जिनके सहयोग से वृत्तचित्र को डिजिटल प्लेटफार्म पर प्रदर्शन करने हेतु स्वरूप प्रदान किया जा सका।

डॉ० दिलीप कुमार सन्त
अनुसंधान अधिकारी
आदि दृश्य विभाग
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली

प्रमोद कुमार
परियोजना सहायक
आदि दृश्य विभाग
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली